ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक - 11 सितम्बर-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

श्रीकृष्ण की मनमोहन छवि की छटा बिखरेगी इस धरा पर..!

एक आम जनमानस से लेकर विशेष व्यक्ति तक, सभी की चाह है, आशना है, एक ऐसे आशियाने की जो पूरी तरह से अमन, चैन व पाकीज़गी से आच्छादित हो, जहां सब हों, सभी के लिए हों, सबके स्वर एक हों, उठें तो मधुर पंछियों के गान के साथ, खेलें तो सुन्दर साज़ वाले फूलों व भ्रमर गुंजन के साथ। जहां खेलना, खाना और रास रचाना हो। ऐसी मनभावन दुनिया, जहां हर माँ यशोदा और हर पिता नंदबाबा होगा, बस आने ही वाला है...! विडम्बना यह है कि आप कहीं वंचित न रह जायें। ये शिकायत न रहे कि आपने हमें बताया नहीं, कि मनोहर श्री कृष्ण की मनमोहन छवि की मनोरम छटा इस धरा पर बिखरने वाली है...!

कहते हैं सतयुगी सृष्टि में सभी रास रचाते थे, कृष्ण को भी रासलीला करते हुए दिखाया गया है। वैसे भी रास को अंग्रेजी में हार्मनी कहते हैं, हार्मनी का अर्थ है जहां सभी सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते हों। सभी जब एक-दूसरे के साथ हार्मनी से रहते हैं, रास रचाते हैं तो दुनिया बहुत सुंदर हो जाती है। रास रचाने की दुनिया में जाने की शर्त है कि हम भी सबसे पहले अपने आप तथा अपने आस-पास के लोगों के साथ रास रचायें, अर्थात् सौहार्दपूर्ण संबंध का निर्माण करें, क्योंकि किसी भी संस्कार की शुरुआत एक दिन में तो नहीं हो जाती। बस आपको आज व अभी से उस दौड़ में नामांकन कराने के लिए अपने संस्कारों पर कार्य करना है। कहते हैं कि जो आज हम हैं, वो पूर्व जन्मों के संस्कारों के आधार से हैं। अब आप यदि उस संस्कार को पुनः अपना बना लेते हैं तो आप उस चीज़ की भागीदारी सुनिश्चित कर लेंगे। कृष्ण जैसे रूप को सभी पाना चाहते हैं, सभी वैसा बनना भी चाहते हैं, लेकिन उसके पीछे व्यावहारिक रूप से अपने को आकर्षणमय बनाना तो पड़ेगा ना! क्योंकि उस आकर्षणमय सृष्टि में हमारा प्रवेश महज़ इत्तेफाक नहीं है, बल्कि हमें परिवर्तन से वहां जाना होता है। बिना पूर्व तैयारी के वहां की खुशबू को तो हम छू भी नहीं पायेंगे। इसके लिए हमें करना कुछ नहीं है, करना सिर्फ एक चीज़ है कि हमको राजयोग सीखकर राजकुमार बनना है, तभी हम उस नरपति, उस कृष्ण या उस जैसे राजकुमार के साथ रास रचा पायेंगे। तो हम चाहते हैं कि आप भी परिवर्तन करें, यदि उस आकर्षणमय सृष्टि के साथ आपको जुड़ना है तो! बस, आप आज से और अभी से ही उठ जाइए और बढ़ा दीजिए अपना हाथ। हमें भक्ति-भाव से निकल उसके भाव को विवेक से समझ, अपना ज्ञान व अनुभव बढ़ाकर उस दुनिया के लिए तैयारी करनी है।

फिर भी हम सोच रहे हैं कि क्या ऐसा भी हो सकता है...? क्योंकि मानव मन इतनी गहरी चोट कालचक्र के अनुरूप इस कलियुग के अंतिम चरण में झेल रहा है, तो उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि आने वाले समय में कुछ ऐसा होने जा रहा है। जैसे सुबह, दोपहर, शाम और रात, सप्ताह चक्र, वर्ष चक्र घूमता है, उसी प्रकार विश्व कालचक्र में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग भी घूमता है। सभी चक्र अपने समयानुसार उस परिस्थिति में अच्छे होते हैं, जब वो कालक्रम घट रहा होता है, लेकिन अंतिम चरण में स्थितियां बदल ही जाती हैं। आज भी वैसा ही हो रहा है। आज हम उसी दौर से गुज़र रहे हैं जहां कलियुग के बारे में ग्रन्थों में कहा गया है कि ऐसा कलियुग आएगा जहां कन्या मुख से वर मांगेगी, गाय विष्टा खायेगी, सामान पुड़ियों में बिकेगा, तब समझना कि कलियुग का अंतिम दौर है और उसी के बाद अंत निश्चित है। उसी को देखते हुए आज हम यदि सारे विश्व में दृष्टिपात करें तो ये चिन्ह हमारे मानस पटल पर उभर आता है। ये कोई कोरी कल्पना नहीं, क्योंकि ये चक्र अच्छाई के बाद बुराई, बुराई के अंत और फिर अच्छाई, ये विधि का विधान है। जैसे कहीं न कहीं हमारे मन में यह विचार प्रस्फुटित होता है कि वसुधैव कुटुम्बकम जैसी व्यवस्था इसी विश्व में हो। अब बहुत हो गया और बस...बस...और बस! हमें पूर्व में बताया कि कृष्ण के साथ रास रूपी हमारा जीवन होगा, तो यह कालचक्र पुनः निकट भविष्य में दोहराने जा रहा है। लेकिन प्रश्न उठता है कि ये सब कैसे होगा? बस और कुछ नहीं करना है। अपने मन में उपजती विकृत सोच रूपी फसल को समाप्त करना होगा और स्वयं में निहित दिव्य व अच्छे विचारों को आरोपित करते हुए जीवन जीना आरंभ करना होगा। योग का मतलब ही है स्वयं में परमात्मा द्वारा दी हुई भीतरी सुंदरता व दिव्यता को व्यावहारिक रूप देना। तो आइये, हम जिस स्वर्णिम दुनिया की कल्पना कर रहे हैं, उस तरफ एक कदम बढ़ाकर शुरुआत स्वयं से करें जिससे हमारे मन में सुख-शांति रूपी चैन की बांसुरी बजे।